समापन सत्र : सायं. ४.०० से ५.००

मंतव्य : **डॉ. आभा सिंह,** संगोष्ठी समन्वयक

अभिमत : **डॉ. शुचिस्मिता मिश्रा,** आई.क्यू.ए.सी. समन्वयक

उध्दोधन : **डॉ. एम.जी. चांदेकर,** प्राचार्य वी.एम.वी. महाविद्यालय

अध्यक्षीय उध्दोधन : **अधिवक्ता नरेन्द्र भाई झा**

परामर्श समिति

श्री योगेशभाई पटेल - अध्यक्ष – श्री नागपुर गुजराती मंडल

अधिवक्ता श्री नरेन्द्रभाई झा - उपाध्यक्ष, श्री नागपुर गुजराती मंडल

अधिवक्ता श्री संजयभाई ठाकर - सचिव, श्री नागपुर गुजराती मंडल

प्राचार्य डॉ. एम. जी. चांदेकर - पूर्व कुलगुरु, संत गाडगेबाबा अमरावती विद्यापीठ

डॉ. अतुल वैद्य - निदेशक, सीएसआईआर – नीरी

श्री अनूप श्रीवास्तव - महामंत्री माध्यम साहित्यिक संस्थान, लखनऊ

डॉ. हरीश नवल - प्रख्यात साहित्यकार, पूर्व प्रोफेसर एवं हिन्दी विभाग प्रमुख, हिन्दू कॉलेज, दिल्ली

डॉ. बसंत त्रिपाठी - प्रख्यात साहित्यकार, प्रोफेसर, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश

मा. सूर्यबाला लाल - प्रख्यात साहित्यकार, मुंबई, महाराष्ट्र

डॉ. स्नेहलता पाठक - पूर्व विभागाध्यक्ष, छत्तीसगढ़ शासकीय महाविद्यालय

संगोष्ठी स्थल

वी.एम.वी. वाणिज्य, जे.एम.टी. कला एवं जे.जे.पी. विज्ञान महाविद्यालय,
वर्धमान नगर, नागपुर

Registration Link : https://forms.gle/Rc7vxnpD2Yfw7Yjd6

संपर्क सूत्र

वी.एम.वी. महाविद्यालय : **डॉ. आभा सिंह,** संगोष्ठी समन्वयक
भ्रमणध्वनी : ९८५०३५२९४६
: **डॉ. शुचिस्मिता मिश्रा,** समन्वयक आई.क्यू.ए.सी.
भ्रमणध्वनी : ९८२३०३६२००

नीरी : **श्री. यू.एम. टाकलीकर,** प्रभारी, राजभाषा विभाग, नीरी
भ्रमणध्वनी : ९४२१७६४७३२
: **श्री सौरभ मुले,** हिन्दी अनुवादक, नीरी
भ्रमणध्वनी : ९९६०९९८८२५

आज़ादी का अमृत महोत्सव

NEERI

वी.एम.वी. वाणिज्य, जे.एम.टी. कला एवं जे.जे.पी. विज्ञान महाविद्यालय

तथा

सी.एस.आई.आर. - राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

विषय

''समकालीन हिन्दी साहित्य में पर्यावरण विमर्श''

२८ सितम्बर, २०२२

संगोष्ठी समन्वयक

डॉ. आभा सिंह,
हिन्दी विभाग प्रमुख, वी.एम.वी. महाविद्यालय

डॉ. हर्षवर्धन सिंह,
वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष हिन्दी समिति, सी.एस.आई.आर.- नीरी

संगोष्ठी संदर्भ

प्रकृति मनुष्य की सहचर भी है और मार्गदर्शक भी। मनुष्य और पर्यावरण के मध्य यह परस्पर पूरक अंतरसंबंध है। प्रारंभ से प्रकृति से पाता आया मनुष्य जाने अनजाने प्रकृति के अधिकार क्षेत्र में दखलंदाजी करता रहता है। जैसे-जैसे आधुनिकता की रफ्तार बढ़ रही है वैसे-वैसे जीवन यापन आसान होने की बजाय कठिन होता जा रहा है। पर्यावरण और जीवन की अभिन्नता से सभी परिचित है। प्रकृति के वरदहस्त से परिचित होने के बाद भी मनुष्य विकास के नाम पर विनाश की ओर बढ़ रहा है। नतीजतन प्रकृति अपनी ओर से अपनी क्षमता का प्रदर्शन करती है। प्रकृति और मनुष्य के इन बनते बिगड़ते संबंधों को साहित्य ने समय-समय पर अभिव्यक्त किया है। हिन्दी साहित्य में तो प्रकृति के मानवीकरण पर एक पूरा कालखंड आधारित है। साहित्य की मुखर चेतना प्रकृति की पीड़ा से समाज को अवगत कराती है। बदलते मानवीय समीकरण और प्रकृति के बदलते मानदंडों के कारण मानव विचार श्रृंखला में एक विराम अत्यंत आवश्यक है। यह विराम है चिंतन के लिए। हर युग का साहित्य उस दौर का मुखपत्र माना जाता है। साहित्यकार पर यह दायित्व उसके कर्म ने दिया है कि वह विवेक के साथ समझौता नहीं कर सकता। हिन्दी साहित्य में आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक प्रकृति को हमेशा विशिष्ट स्थान मिला है। पर्यावरण चिंतन की समृद्ध परंपरा का हिन्दी साहित्य हमेशा से संवाहक बना है। साहित्यकार के साथ-साथ पर्यावरणविद भी समय-समय पर पर्यावरण के असंतुलन की ओर ध्यान आकर्षित करते रहते हैं। पर्यावरण के स्वस्थ रहने की अनिवार्यता को समझना और उसके लिए प्रयासरत रहना समय की आवश्यकता है।

आयोजक

वी.एम.वी. महाविद्यालय : वी.एम.वी. वाणिज्य, जे.ए.टी. कला तथा जे.जे.पी. विज्ञान महाविद्यालय राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय संलग्नित तथा श्री नागपुर गुजराती मंडल द्वारा संचालित एक ऐसा महाविद्यालय है जो पूर्व नागपुर का सबसे पुराना तथा सबसे बड़ा महाविद्यालय है। महाविद्यालय में बी.ए., बी.कॉम, बी.एस.सी. के अलावा बी.बी.ए., बी.सी.ए., बी.सी.सी.ए., एम.कॉम, एम.एस.सी. तथा पी.जी.डी.सी.सी.ए. एवं एम.सी.ए. की शिक्षा ग्रहण करने वाले ६५०० से अधिक विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। समाज के आर्थिक सामाजिक असंतुलन को शिक्षा के द्वारा संतुलित करने के लिए महाविद्यालय एवं संस्था कटिबद्ध हैं। महाविद्यालय में शिक्षा हिन्दी साहित्य की नाना विधाओं पर आधारित समयानुपयोगी एवं विद्यार्थी केन्द्रित गतिविधियां प्रमुखता से आयोजित की जाती है। महाविद्यालय का उद्देश्य नैतिक मूल्यों के साथ व्यावहारिक समझ को विकसित करना है। इस दृष्टि से समकालीन हिन्दी साहित्य में पर्यावरण विमर्श समझना आवश्यक है।

सह आयोजक

सीएसआईआर-नीरी : यह पर्यावरण के क्षेत्र में काम करने वाला भारत का एकमात्र केंद्रीय संस्थान है। पर्यावरण जगत का यह एक लब्धप्रतिष्ठित नाम है। राष्ट्रीय ही नहीं अंतरराष्ट्रीय पटल पर पर्यावरण के क्षेत्र में काम करने के लिए नीरी का नाम अग्रणी है। पर्यावरण के विभिन्न घटकों (जल, वायु, भूमि इत्यादि) पर नीरी उल्लेखनीय कार्य कर रही है। इसके अलावा अपशिष्ट जल प्रबंधन, शुद्ध जल, ठोस एवं खतरनाक अपशिष्ट, पर्यावरणीय प्रभाव आंकलन आदि में संस्थान ने विशेष योगदान दिया है। बदलते पर्यावरणीय चुनौतियों के अनुसार नीरी अपने कार्य क्षेत्र का विस्तार कर रही है। जनमानस के बीच पर्यावरण की जटिलताओं को समझाने के लिए नीरी जनभाषा हिन्दी में संगोष्ठी के सह आयोजक का दायित्व निर्वहन कर रही है।

उद्घाटन सत्र : प्रातः ९.३० से ११.३०

विषय प्रवर्तक : श्री. पंकज चतुर्वेदी, संपादक, नेशनल बुक ट्रस्ट

अतिथि विशेष : पर्यावरणविद डॉ. मधु वत्स, माँ अंबा बालिका महाविद्यालय, बागपत, मेरठ

मुख्य अतिथि : डॉ. अतुल वैद्य, निदेशक, सीएसआईआर-नीरी, नागपुर

अध्यक्ष : प्राचार्य डॉ. एम. जी. चांदेकर, वी.एम.वी.महाविद्यालय, नागपुर

प्रथम तकनीकी सत्र : दोपहर १२.०० से १.३०

समकालीन हिन्दी काव्येतर साहित्य में पर्यावरण चेतना

वक्ता : डॉ. जया आनंद,
श्रीमती चांदी बाई हिम्मतलाल मनसुखानी कॉलेज, ठाणे
: डॉ. अल्का सिगतिया,
अध्यक्ष, राइटर्स व जर्नलिस्ट असोसिएशन महिला विंग, मुंबई
: डॉ. हर्षवर्धन सिंह,
वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष हिन्दी समिति, नीरी, नागपुर

अध्यक्ष : डॉ. वीणा दाढ़े,
पूर्व विभागाध्यक्ष स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, रा.तु.म. नागपुर विद्यापीठ

भोजनावकाश : दोपहर १.३० से २.३०

द्वितीय तकनीकी सत्र : दोपहर २.३० से ४.००

समकालीन हिन्दी काव्य में पर्यावरण चेतना

वक्ता : प्रीती अज्ञात,
संस्थापक-संपादक हस्ताक्षर वेब पत्रिका, अहमदाबाद
: भारती पाठक,
बेसिक शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश

अध्यक्ष : डॉ. मीनाक्षी जोशी,
पूर्व सदस्य, महाराष्ट्र गुजराती साहित्य अकादमी